ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-10* November- 2017
Innovation The Research Concept

महादेवी के नारी संबंधी रेखाचित्रों में स्त्री मुक्ति और विमर्श के बहुआयामी स्वर

भावना पाण्डेय
शोधार्थी,
हिन्दी एवं भाषा विज्ञान विभाग
एवं अनुसंधान केन्द्र,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,
जबलपुर, म.प्र.

सारांश

महादेवी वर्मा के काव्य की तरह उनका गद्य साहित्य भी बेमिसाल है। जिस प्रकार अपने काव्य की संवेदना और शिल्प को लेकर उनको छायावाद के चार स्तंभों में स्थान दिया जाता है उसी प्रकार उसी प्रकार उनका गद्य साहित्य भी महादेवी जी को हिन्दी गद्य की विविध विधाओं में सिरमौर सिद्ध करने की क्षमताओं से संपृक्त है। उनका समूचा निबंध साहित्य किसी भी पक्ष को लेकर आचार्य रामचंद्र शुक्ल और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के निबंधों के कथ्य एवं शिल्प से कमतर नहीं आँका जा सकता इसी प्रकार उनके संस्मरण और रेखाचित्र अपने अनूठे विन्यास के कारण महादेवी जी को शीर्षस्थ गद्यकारों में स्थान दिलाने के लिए पर्याप्त हैं।

मुख्य शब्द : शिल्प, भावनात्मक जुड़ाव, संस्मरणात्मक रेखाचित्र,यात्रावृत्त, मानवीय व्यक्तित्व, विश्लेषणात्मक।

प्रस्तावना

उनके संस्मरणों और रेखाचित्रों में उनके काव्यमय व्यक्तित्व के साथ–साथ उनकी संगीतात्मकता की लय भी विद्यमान है और उनकी चित्रकला की वे बारीकियाँ भी जो उनके पात्रों को पाठकों के सामने प्रत्यक्ष करते हुए उन पात्रों को जीवंत कर पाठकों से साक्षात्कार कराने में सर्वथा सक्षम है। रेखाचित्रों में पात्रों के साथ भावनात्मक जुड़ाव की जिस सीमा को महादेवी जी ने स्पर्श किया है वह महादेवी जी की सूक्ष्म संवेदना का परिचायक है। शायद इन्हीं विशेषताओं के कारण उनके रेखाचित्रों को पढ़ते हुए ऐसा आभास होता है कि वे संस्मरणात्मक रेखाचित्र हैं और उनके संस्मरणों को पढ़ते हुए पाठक को लगने लगता है कि वे रेखाचित्रात्मक संस्मरण हैं। लालित्य और गंभीर विवेचन से सने हुए उनके निबंधों, यात्रावृत्तों के साथ ही उनके संभाषणों में भी एक आकर्षण है जो बरबस पाठक और श्रोताओं को आत्म मंथन करने पर विवश कर देता है।

उनका समूचा गद्य साहित्य न केवल मानसिक वातायनों को एक स्वच्छ वातावरण प्रदान करता है बल्कि पाठकों के अंदर दबे–छिपे हुए मूल्यों को जागृत कर उसके व्यक्तित्व का परिष्कार भी करता है। और यही महादेवी जी के गद्य को उनके उस कसौटी पर खरा सोना सिद्ध करता है जिसके लिए आचार्य रामचंद्र शुक्ल का सूत्र साहित्य के उस अमर वाक्य की तरह बन गया है जिसकी पुष्टि के लिए आज हिन्दी गद्य साहित्य का इतना विस्तार संभव हो पाया है जो इसे विश्व के समस्त साहित्य को मिलाकर तुलना करने पर भी सर्वाधिक और सर्वश्रेष्ठ घोषित करने के प्रमाण प्रस्तुत करता है। महादेवी जी के रेखाचित्र उनके 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ' और 'मेरा परिवार' में संकलित हैं। जिनमें से प्रथम दो संकलनों में उनके मानवीय व्यक्तित्वों के रेखाचित्र संकलित हैं। इन रेखाचित्रों में पुरुष एवं स्त्री दोनों ही पात्रों से संबंधित उत्तम कोटि के रेखाचित्र संकलित हैं। प्रस्तुत शोधपत्र महादेवी जी के उन रेखाचित्रों से संबंधित है जिनका रेखांकन स्त्री पात्रों को केन्द्र में रखकर किया गया है।

उपलब्ध सामग्री

'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'महादेवी साहित्य भाग–2(सेतु प्रकाशन झाँसी), 'श्रृंखला की कड़ियाँ', विभिन्न पत्र–पत्रिकाएँ एवं शोध गंगा से प्राप्त कुछ शोध प्रबंध सामग्री।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के लेखन का उद्देश्य महादेवी वर्मा द्वारा रचित विभिन्न साहित्यिक विधाओं द्वारा स्त्री शिक्षा तथा महिलाओं को सशक्त बनाने की प्रेरणा से है। महादेवी जी के रेखाचित्र उनके 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ'

और 'मेरा परिवार' में किस प्रकार स्त्री प्रसंग तथा स्त्री विमर्श की संकल्पना की गई इनका विश्लेषण करना है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोधपत्र लेखन में विवेचनात्मक–विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि को आधार बनाया गया है।

विमर्श

महादेवी जी के 'अतीत के चलचित्र' में कुल 11 रेखाचित्र हैं जिनमें भाभी, बिन्दा, बिट्टी, सबिया, बालिका माता, लछमा और अभागी स्त्री को मिलाकर स्त्री पात्रों की कुल संख्या 7 है। इसी प्रकार उनके 'स्मृति की रेखाओं' में कुल मिलाकर 7 रेखाचित्र हैं जिनमें से स्त्री पात्रों की संख्या 3 हैं जिनके पात्रों के नाम क्रमशः भक्तिन, मुन्नू की माँ और बिबिया हैं। इन दोनों की संकलनों में महादेवी जी ने जिन पात्रों को अपने कथ्य का विषय बनाया है वे विषय और उनके पात्र दोनों ही सामान्य भावभूमि पर केन्द्रित होने के साथ–साथ संवेदना के स्तर पर विशिष्ट हो जाते हैं। वैसे तो इनमें से सभी पात्र समाज के ऐसे वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं जो विभिन्न प्रकार से समाज की उपेक्षा का दंश झेलते हुए अपना जीवन काट रहे होते हैं किंतु इसके बावजूद उन्हें न समाज से कोई शिकायत है न विधाता से और न स्वयं से वे अंधेरे में एक प्रकाश किरण की भाँति अपने आत्मविश्वास की दीप्ति के आलोक में अपने जीवन संग्राम में निरंतर रत् रहते हुए आगे बढ़ रहे हैं फिर भी महादेवी जी ने इन रेखाचित्रों के स्त्री पात्रों का जिस भाव–संवेदना को स्पर्श करते हुए आत्मीयता के साथ रेखांकन किया है उससे उनका कथ्य केवल उनका नहीं रह जाता पाठक का कथ्य हो जाता है।

उनके रेखाचित्रों में विभिन्न स्त्री पात्रों का जो संवेदनशील–चित्रण मिलता है उसका प्रारंभ 'अतीत के चलचित्र' से होता हैं जिसमें मारवाड़ी बाल विधवा भाभी के कष्टों का जैसा चित्रण महादेवी जी ने किया है वह उनके दुःख को हमारे परिवेश से जोड़ देता है जिस वय में बालिकाओं को हँसना–बोलना मन को संतृप्त करता है उसी वय में उसे घर की चाहर–दीवारी में कैद होकर अपना जीवन बिताना पड़ता है। दिनरात काम करके भी उसका समय नहीं बीत पाता। उसके साथ उसके ससुर और ननद मारपीट करते हैं। महादेवी जी द्रवित होकर लिखती हैं कि ''क्रूरता का वैसा प्रदर्शन मैंने फिर कभी नहीं देखा। बचाने का कोई उपाय ने देखकर कदाचित मैंने जोर–जोर से रोना प्रारंभ किया, परंतु बच तो वह तब सकी, जब मन से ही नहीं शरीर से भी बेसुध हो गई। परंतु बहुत दिनों के बाद जब मैंने फिर उसे देखा, तब उन बचपन भरी आँखों में विषाद का गाढ़ा रंग चढ़ चुका था और वे ओठ, जिन पर किसी दिन हँसी छिपी–सी जान पड़ती थी, ऐसे काँपते थे, मानो भीतर का क्रंदन रोकने के प्रयास से थक गए हों। उस घटना से बालिका प्रौढ़ हो गई थी और युवती वृद्धा।''[1]

विमाता के अत्याचारों की सतायी हुई बिन्दा के रेखाचित्र में महादेवी जी ने स्त्री पर स्त्री के द्वारा होने वाले अत्याचारों का संकेत दिया है। बिन्दा को गलती ने होने पर भी दंड का भागी बनाया जाता है। करुणा से आप्लावित इस रेखचित्र को पढ़कर स्वयं पाठक भी बिन्दा के प्रति सहानुभूति रखने लगता है। वे लिखती हैं कि ''बिन्दा के अपराध तो मेरे लिए अज्ञात थे पर पंडिताईन चाची के न्यायालय से मिलने वाले दंड के सब रूपों से मैं परिचित हो चुकी थी। गर्मी की दोपहर में मैंने बिन्दा को आँगन की जलती धरती पर बार–बार पैर उठाते और रखते हुए घंटों खड़े देखा था, चौके के खंबे से दिन–दिन भर बँधा पाया था और भूख से मुरझाए मुख के साथ पहरों नई अम्मा और खटोले में सोते मोहन पर पंखा झेलते देखा था। उसे अपराध का ही नहीं, अपराध के अभाव का भी दंड सहना पड़ता था, इसी से पंडित जी की थाली में पंडिताइन चाची का ही काला मोटा और घुँघराला बाल निकलने पर दंड भी बिन्दा को ही मिला।''[2]

पैंतीस वर्ष की बाल विवाहित कन्या के विधवा जाने पर बिट्टी का विवाह अपनी आयु से बहुत अधिक आयु के वृद्ध से कर दिया जाता है ऊपर से विडम्बना यह कि यह उस विदुर का पुनर्विवाह था। यहाँ वैचारिक सामंजस्य की विषमता के साथ अनमेल विवाह के दोषों पर महादेवी जी ने प्रकाश डालने का प्रयास किया है। माता–पिता की मृत्यु के बाद तीन भाइयों के होने पर भी बिट्टी के सामने उत्पन्न विषम परिस्थितियों को महादेवी जी ने बड़े मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। उसकी भाभी के साथ ही उसकी पड़ोसिनें भी उसे व्यंग्य भरे कटाक्षों से ढेस पहुँचाने में नहीं चूकतीं। स्थिति यहाँ तक पहुँच जाती है कि बिट्टी को लगातार ज्वर रहने लगता है और उसे बेहोशी के दौरे तक शुरु हो जाते हैं। महादेवी जी बिट्टी के अनमने मन से किये जाने विवाह का चित्रण करते हुए लिखती हैं कि ''पैंतीस वर्ष का दीर्घ वैधव्य पार कर चिता में बैठे हुए वृद्ध वर के लिए पुनः स्वयंवरा बनने वाली वह दुर्लभ और थकी हुई–सी स्त्री मेरे लिए एक साकार विस्मय बन गयी। टसर की मटमैली साड़ी में लिपटी उस संकुचित मूर्ति में न रूप था न स्वास्थ्य, न कोई उमंग शेष थी, न उल्लास।''[3]

दांपत्य जीवन को बिखरने से बचाने के लिए अपने पति की दूसरी स्त्री को नियति के रूप में स्वीकार कर एक स्त्री के त्याग, प्रेम, वात्सल्य, कर्तव्यपरायणता आदि की स्थापना करने वालों के रूप में सबिया का रेखाचित्र महादेवी वर्मा के उन रेखाचित्रों में है जो एक स्त्री के ह्रदय की विशालता का सूचक है। इस रेखाचित्र की पात्र 'सबिया' का पति दूसरी शादी करके गेंदा नामक स्त्री को ले आता है जिसे स्वीकार कर सबिया अपने पतिव्रत प्रेम का परिचय देती है वह सबिया से उसी की रेश्मी साड़ी माँगे जाने पर वह उसे तुरंत उतारकर मैकू देती है और अपनी सास के रोकने पर भी दूसरी पत्नी को घर में स्थान देती है। इतना ही नहीं वह गेंदा के पूर्व पति से उसे मुक्त कराने के लिए अपना वेतन भी दे देती है। इतने पर भी सबिया का जीवन दुःखमय ही रह गया। महादेवी जी सबिया के बारे लिखती हैं कि ''गेंदा का उसे घर में रहना सर्वसम्मत हो जाने पर भी सबिया का कष्ट घटा नहीं, क्योंकि वह हर साँस में लड़ती रहती थी। फिर भी जब मैं दोनों समय सबिया को एक बड़े लोटे में दाल और थाली में रोटी–चावल ले जाते देखती तो मेरा मन विस्मय से भर जाता था। इतने अंगारों से भरे जाने पर भी इसके वात्सल्य का अंचल दूसरों की छाया देने में समर्थ है। यह जैसे अपने नादान बच्चों के उत्पात की चिंता नहीं

करती, उसी प्रकार पति की हृदयहीन कृतघ्नता सपत्नी के अनुचित व्यंग्य और सास की अकारण भर्त्सना पर भी ध्यान नहीं देती।''[4] आर्थिक स्थिति की समाज के साम्य और वैषम्य का समाज के विविध पक्षों और विभिन्न पहलुओं पर प्रभाव बताते हुए महादेवी जी ने अपने इस रेखाचित्र में समाज के मौकापरस्त लोगों के साथ–साथ अन्य कई विसंगतियों की कलई खोली है।

इसी आर्थिक विपन्नता की पराकाष्ठा महादेवी जी के 'बालिका माता' नामक रेखाचित्र में मिलता है। जिसमें स्त्री और पुरुष दोनों ही पात्र दरिद्रता को भोगने के लिए मजबूर हैं। बालिका माता की दरिद्रता के विविध संत्रासों का उल्लेख करते हुए वे लिखती हैं कि ''स्मरण नहीं आता वैसी करुणा मैंने कहीं और देखी है। खाट पर बिछी मैली दरी, सहस्त्रों सिकुड़न भरी मलिन चादर और तेल के कई धब्बे वाले तकिये के साथ मैंने जिस दयनीय मूर्ति से साक्षात् किया, उसका ठीक चित्र दे सकना संभव नहीं है। वह 18 वर्ष से अधिक की नहीं जान पड़ती थी दुर्बल और असहाय जैसी। सूखे ओठवाले, साँवले पर रक्तहीनता से पीले मुख में आँखें ऐसे जल रही थीं जैसे तेलहीन दीपक की बाती।''[5] समाज की दयनीय स्थिति को छेलती वह अपने बालक को छाती से लगाकर जितनी निर्भर दिखाई देती है उतनी अन्य किसी अवस्था में नहीं दिखाई देती। महादेवी जी लिखती हैं कि अभावग्रस्त और लाचार होने पर भी अपनी संतान की रक्षा के लिए वह चण्डी बनने में एक पल का भी विलंब नहीं करती। यह लालची संसार उससे जैसे ही उसका एकमात्र आलंबन छीनने का प्रयास करता है वह अपने दूसरे रूप में आ जाती है। अन्याय और षड़यंत्रों का सामना करती स्त्री के करुणामय कथानक को इस रेखाचित्र में महादेवी जी ने विषय बनाया है।

महादेवी जी के रेखाचित्रों में सर्वाधिक सहनशील और विद्रोही दोनों गुणों से परिपूर्ण पात्र यदि कोई है तो वह लछमा है। लछमा का रेखांकन करते हुए वे लिखती हैं कि ''एक पुरुष के प्रति अन्याय की कल्पना से ही सारा पुरुष–समाज उस स्त्री से प्रतिशोध लेने को उतारू हो जाता है और एक स्त्री के साथ क्रूरतम अन्याय का प्रमाण पाकर भी सब स्त्रियाँ उसके अकारण दण्ड को अधिक भारी बनाए बिना नहीं रहतीं। इस तरह पग–पग पर पुरुष से सहायता की याचना करने वाली स्त्री की स्थिति कुछ विचित्र–सी है। वह जितनी ही पहुँच के बाहर होती है, पुरुष उतना ही झुँझलाता है और प्रायः यह झुँझलाहट मिथ्या अभियोगों के रूप में परिवर्तित हो जाती है।''[6] लछमा के अविकसित मानसिक अवस्था वाले पति की जिम्मेदारी निभाते हुए अपने ससुराल वालों को अपनी संपत्ति देने के साहस को महादेवी जी ने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। परमार्थ की भावना से संपृक्त लछमा के चरित्र को महादेवी जी ने सहनशीलता के गुण से सुसज्जित किया है। लछमा में घोर विरोध के क्षणों में अटल–अविचल रहने की क्षमता है तो बड़े से बड़े अपकार को क्षमा कर देने का साहस भी है। किसी की निंदा या अपने कृत्य की सफाई जैसे दुर्बल चारित्रिक गुणों से सर्वथा विपरीत लछमा का चरित्र अत्यंत सुदृढ़ होकर सामने आया है जिसका मन स्वच्छ दर्पण की तरह साफ है।

वेश्या माँ के आदेश को अस्वीकार कर दांपत्य जीवन की आशा को संजोने वाली 'अभागी स्त्री' का रेखाचित्र एक नारी के जीवन संघर्षों का जीवंत दस्तावेज है। प्रगतिशील विचारों के युवक से विवाह कर लेने के बाद उसकी वास्तविक परीक्षा प्रारंभ होती है। पति की असमय मृत्यु से उसके दुःखों का आरंभ होता है किंतु स्वाभिमानी होने के कारण वह महादेवी जी के यहाँ ही काम करने लगती है और न अपने मायके जाती है और न अपने ससुराल। वे समाज की पुरुषवादी मानसिकता की ओर कटाक्ष करते हुए लिखती हैं कि ''पता नहीं समाज के पास वह जादू की छड़ी है, जिससे छूकर वह जिस स्त्री को सती कह देता है, केवल वही सती होने का सौभाग्य प्राप्त कर सकती है। जिसे समाज ने एक बार कुल वधुओं की पंक्ति से बाहर खड़ा कर दिया, उसे जन्म–जन्मांतर तक अपनी सभी भावी पीढ़ियों के साथ बाहर खड़े रहने को ही जीवन का सबसे बड़ा वरदान समझना चाहिए।''[7]

'स्मृति की रेखाओं' में संकलित भक्तिन का रेखाचित्र एक और ऐसा रेखाचित्र है जिसके माध्यम से उन्होंने स्त्री के स्वतंत्र व्यक्तित्व को सामने लाने का प्रयास किया है। भक्तिन अपनी प्रारंभिक अवस्था से ही संघर्ष देखती आई है। बाल्यावस्था में विमाता द्वारा, विवाह के बाद ससुराल में सभी उसे दुःखी करते हैं किंतु वह समर्पण की बजाय संघर्ष में विश्वास रखती है।

महादेवी जी ने जिस दरिद्रता का उल्लेख उनके पूर्व के रेखाचित्रों में किया था उसका सर्वाधिक विस्तृत रूप उनके इस रेखाचित्र में मिलता है। जिसमें कई अभावग्रस्त गाँवों और उनकी कठिनाइयों का वर्णन मिलता है। महादेवी जी ने आर्थिक अभावों को झेलती हुई स्त्री की स्थिति के साथ पुरुष और महिलाओं के बीच किये जाने वाले भेदभावों का चित्रण इस रेखाचित्र में किया है। वे बन्जारों को अपने कथ्य का विषय बनाते हुए लिखती हैं कि ''यदि बुटीया पुत्र होती, तो वह उसे संसार में सबसे श्रेष्ठ कथावाचक बना देता, पर बेटी के रूप में तो वह बहु पराई धरोहर है। अच्छे घर पहुँच जाए यही बड़ा भाग्य है।''[8]

स्त्री के चरित्र को लेकर लगाये जाने वाले अप्रमाणिक लांछनों की परत–दर–परत खोलता महादेवी जी का रेखाचित्र 'बिबिया' स्त्री से संबंधित पारिवारिक अधिकारों, बहुविवाह, उस पर किये जाने वाले अत्याचारों, वैधव्य भोगती स्त्री की समस्याओं आदि पर प्रकाश डाला है। इस रेखाचित्र में धोबी समाज की एक स्त्री बिबिया का द्वितीय विवाह रमई नाम के व्यक्ति से होता है जो कि जुआ और शराब के व्यसन से ग्रसित है तो बिबिया उससे पिंड छुड़ाने के लिए भाग जाती है। किंतु उसके ऐसा करने के परोक्ष कारण को न जानकर उल्टा बिबिया के चरित्र पर ही संदेह किया जाता है जिसके कारण उसका भाई उसका तृतीय विवाह एक ऐसे अधेड़ विधुर से कर देता है जिसकी पहले से ही 5 संतानें हैं। वहाँ भी बिबिया के चरित्र को संदेह की दृष्टि से देखा जाता है। महादेवी वर्मा स्त्री जाति के प्रति इस प्रकार की दोहरी मानसिकता से ग्रसित समाज पर प्रश्न चिन्ह लगाते हुए लिखती हैं कि

''बिबिया क्या वास्तव में चरित्रहीन है? यदि नहीं, तो वह किसी घर में आदर का स्थान क्यों नहीं बना पाती? उससे रूप गुण में बहुत तुच्छ लड़कियाँ भी अपना–अपना घर संसार बसाए बैठी हैं। इस अभागी में ऐसा कौन–सा दोष है, जिसके कारण इसे कहीं हाथ–भर जगह तक नहीं मिल सकती?''[9]

साक्षरता के विषय को लेकर रेखांकित महादेवी जी का 'गुँगिया' नामक रेखाचित्र एक ऐसी स्त्री का लेखाजोखा है जिसके पति ने उसे विवाह के पहले दिन के पश्चात् ही निकाल बाहर कर उसकी छोटी बहन से विवाह कर ली है। बहन की मृत्यु के बाद गुँगिया ही उसके बच्चे का लालन–पालन करती है। इस प्रकार महादेवी वर्मा जी ने स्त्री जीवन से जुड़े विविध पक्षों को अपने रेखाचित्र के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। महादेवी जी के रेखाचित्रों के स्त्री पात्र परिवार और समाज दोनों ही के द्वारा सताये हुए होने पर भी अपने आत्मविश्वास और आस्था पर अवलंबित हैं जो जीवन संग्राम में धीरे–धीरे ही सही किंतु आगे बढ़ रहे हैं। महादेवी जी ने अपने इन स्त्री पात्रों के द्वारा स्त्री जीवन और जगत् से जुड़ी जो समस्याएँ उठायी हैं वे स्त्री विमर्श और उसकी मुक्ति की पक्षधर समझ आती हैं।

निष्कर्ष

महादेवी जी ने अपने रेखाचित्रों में स्त्री पात्रों को स्त्री विमर्श और स्त्री मुक्ति की परिधि से बाहर निकालते हुए एक व्यक्तित्व के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया है। उनके स्त्री पात्र भी नारी जीवन के विविध पक्षों को पाठकों के समक्ष रखते चलते हैं। इनमें वर्गभेद के साथ–साथ, स्त्री की दुर्बलता, आर्थिक विपन्नता, बालविवाह विधवा विवाह और अनमेल विवाह संबंधी उनके विचारों के अतिरिक्त मातृत्व, त्याग आदि सामने लाते हुए एक व्यक्ति के स्तर पर इन स्त्री पात्रों के संघर्ष का लेखाजोखा दिखाई देता है। महादेवी जी ने अपनी करुणा, स्नेह श्रृद्धा और जिस ममत्व से इन रेखाचित्रों के पात्रों का चित्रण सिंचित करते हुए उनका ऐसा व्यक्तित्व गढ़ा है जिससे वे हमारे चारों ओर मिलने वाले सामान्य पात्रों के समान होकर हमारे दैनिक जीवन से जुड़ जाते हैं। अत्यंत साधारण व्यक्तित्व होने पर भी महादेवी जी के ये पात्र हमारी आस्था के आलंबन बन जाते हैं जिनके प्रति पाठकों में दया का नहीं बल्कि सहिष्णुता का भाव उत्पन्न हो जाता है और यही महादेवी जी के नारी पात्रों को स्त्री विमर्श की अबला–सबला की प्रकृति से मुक्त करते हुए उन्हें एक व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–2000, पृ.–29*
2. *अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–2000, पृ.–35*
3. *अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–2000, पृ.–48*
4. *अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–2000, पृ.–43*
5. *अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–2000, पृ.–55*
6. *अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–2000, पृ.–101*
7. *अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–2000, पृ.–71*
8. *स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण– 1991, पृ.–51*
9. *स्मृति की रेखाएँ, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण– 1991, पृ.–92*